Regd. No. ISSN 0975-7872

VAGEESHWARI

A UGC-CARE listed, Peer-reviewed
Research Journal of the
Department of Music
Faculty of Music & Fine Arts
University of Delhi
Delhi

VOL. XXXIV

December 2020

Editor
Prof. Deepti Omchery Bhalla

Editorial Board
Prof. T.V. Manikandan
Prof. Shailendra Goswami
Dr. Ananya Kumar Dey
Dr. Ajay Kumar
Dr. Vineet Goswami
Ms. Rindana Rahasya
Dr. Prasanth G. Pai

Email: vageeshwari.du.musicdept@gmail.com
Website: ejournal.music.du.ac.in

पंजाब के लोकप्रिय वाद्य एवं प्रस्तुतिकरण

डॉ. गुरशरन कौर
सीनियर एसिसटेंट प्रोफेसर
माता सुन्दरी कालेज फार वुमैन दिल्ली युनिवर्सटी, नई दिल्ली

सार

पंजाब के कलाकारों ने गायकी में ही नहीं अपितु वादन के क्षेत्र में भी बहुत ख्याती प्राप्त की है। पंजाब की धरती गुरूओं, शूरवीरों, परिश्रमी किसानों की भूमि है जहां अनेक लोक वाद्य, शास्त्रीय वाद्यों ने जन्म लिया। पंजाब में प्राय: वही वाद्य प्रयोग में आते रहे हैं जो सारे भारत में प्रचलित हैं लेकिन इस छोटे से लेख में मेरा प्रयास उन कुछ वाद्यों के सन्दर्भ में है जो पंजाब में विशेष महत्व रखते हैं। ताउस, रबाब, सारिन्दा, दिलरूबा, विचित्र वीणा यह सभी वाद्य विशेष रूप से पंजाब में प्रतिष्ठित रहे हैं और कुछ वाद्यों के आविष्कार का श्रेय भी पंजाब को दिया जाता है। लोक संगीत के क्षेत्र में ढ्ढड, अलगोज़ा आदि पंजाब के अपने वाद्य हैं और आज भी इनका वादन बहुत ही लोकप्रिय है। इन सभी वाद्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है एवं इस बात की भी चर्चा की गई है कि प्रस्तुतिकरण में क्या परिवर्तन आए एवं गुरू नानक देव जी ने शास्त्रीय गायन शैलियों में किस प्रकार वादन को प्रमुख रख कर हरि कीर्तन का प्रचार किया।

संकेत शब्द

लोकवाद्य, सारिंदा, रबाब, पखावज, भक्ति संगीत

जब भी हम संगीत की बात करते हैं तो सर्वप्रथम हमारा ध्यान गायन विधा की ओर जाता है। आरंभ से हमें यह भी ज्ञान है कि गायन, वादन और नृत्य इन तीन कलाओं के समावेश को संगीत कहा जाता है और यह अनादि काल से चला आ रहा है। शिव का डमरू, कृष्ण की बन्सी, सरस्वती और नारद की वीणा का अनेक संगीत ग्रन्थों में विवरण होता है। उससे यह बात स्पष्ट है कि केवल गायन ही नहीं अपितु वादन का भी संगीत में महत्वपूर्ण स्थान है। अगर हम ध्यान से देखें तो पंजाब में अधिकतर वाद्यों

Contents

Research Papers

1.	*"Swayambhu Gandhar" – Gaan Saraswati Smt. Kishori Amonkar*	Dr. Gurinder Kaur	1
2.	*Manifestation of Nagaswara in the Images and Rituals of South Indian Tamples*	Dr. Sriraman T V	10
3.	*Understanding Music with Respect to Mind*	Dr. Prerna Arora	20
4.	भारतीय संगीत में निरर्थक शब्द– एक अर्थपूर्ण सिद्धांत	डॉ. रेनु गुप्ता	28
5.	शास्त्रीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में ब्रेल लिपि का महत्व	डॉ. शालिनी ठाकुर	38
6.	ग्वालियर घराने की ख्याल शैली का तकनीकी पक्ष	डॉ. सुरेन्द्र नाथ सोरेन	45
7.	पंजाब के लोकप्रिय वाद्य एवं प्रस्तुतिकरण	डॉ. गुरशरन कौर	53
8.	प्राचीन ताल पद्धति	डॉ. अजय कुमार	62
9.	*Discovery of Songs with the mudrâ of 'Abhinava Purandara Vitthala' in Thanjavur Manuscripts*	K. Srilatha	71
10.	*Regulation of Laya on Râga: Aesthetical Analysis*	Sanjana Kaushik	78